

भक्तामर स्तोत्र

Q.1: भक्तामर स्तोत्र की रचना किसने की थी तथा इस स्तोत्र का दूसरा नाम क्या है!, इस स्तोत्र का नाम "भक्तामर" क्यों पड़ा ? यह कौन सी भाषा में लिखा गया है ?

A.1: भक्तामर स्तोत्र के रचना मानतुंग आचार्य जी ने की थी, इस स्तोत्र का दूसरा नाम आदिनाथ स्तोत्र भी है, यह संस्कृत में लिखा गया है, प्रथम अक्षर भक्तामर होने के कारण ही इस स्तोत्र का नाम भक्तामर स्तोत्र पढ़ गया !!!

Q.2: भक्तामर स्तोत्र में कितने श्लोक हैं तथा हर श्लोक में कौन सी शक्ति निहित है, ऐसे कौन से 4 अक्षर हैं जो की 48 के 48 काव्यों में पाए जाते हैं ?

A.2: भक्तामर स्तोत्र में ४८ श्लोक हैं , हर श्लोक में मंत्र शक्ति निहित है, इसके 48 के 48 श्लोकों में M N T R यह चार अक्षर पाए जाते हैं

Q.3: भक्तामर स्तोत्र की रचना कौन से काल में हुई.? 11वीं शताब्दी में राजा भोज के काल में या 7वीं शताब्दी में राजा हर्षवर्धन के काल में ?

A.3: वैसे तो जो इस स्तोत्र के बारे में सामान्य ये हैं की आचार्य मानतुंगको जब राजा हर्षवर्धन ने जेल में बंद करवा दिया था तब उन्होंने भक्तामर स्तोत्र की रचना की तथा 48 श्लोकों पर 48 ताले टूट गए! अब आते हैं इसके बारे में दुसरे तथा ज्यादा रोचक तथा पर, जिसके अनुसार आचार्य मान तुंग जी ने जेल में रहकर में ताले तोड़ने के लिए नहीं अपितु सामान्य स्तुति की है भगवन आदिनाथ की तथा अभी 10 प्रसिद्ध विद्वानों ने ये सिद्ध भी किया प्रमाण देकर की आचार्य श्री जी राजा हर्षवर्धन के काल ११वीं शताब्दी में न होकर वरन 7वीं शताब्दी में राजा भोज के काल में हुए हैं तो इस तथा अनुसार तो आचार्य श्री 400 वर्ष पूर्व हो चुके हैं राजा हर्षवर्धन के समय से !

Q.4: भक्तामर स्तोत्र का अब तक लगभग कितनी बार पदानुवाद हो चुका है ! तथा इतनी ज्यादा बार इस स्तोत्र का अनुवाद क्यों हुआ तथा यह इतना प्रसिद्ध क्यों हुआ जबकि संसार में और भी स्तोत्र हैं !

A.4: भक्तामर स्तोत्र का अब तक लगभग १३० बार अनुवाद हो चुका है बड़े बड़े धार्मिक गुरु चाहे वो हिन्दू धर्म के हो वो भी भक्तामर स्तोत्र की शक्ति को मानते हैं तथा मानते हैं भक्तामर स्तोत्र जैसे कोई स्तोत्र नहीं है ! अपने आप में बहुत शक्तिशाली होने के कारण यह स्तोत्र बहुत ज्यादा प्रसिद्ध हुआ! यह स्तोत्र संसार का इकलौता स्तोत्र है जिसका इतने बार अनुवाद हुआ जो की इस स्तोत्र की प्रसिद्ध होने को दर्शाता है

Q.5: क्या आप संस्कृत का भक्तामर स्तोत्र पढ़ते हैं तथा सही उच्चारण करते हैं ? यहाँ तक की अनुराधा पौडवाल ने जो भक्तामर स्तोत्र को गाय है उस में भी कुछ संस्कृत सम्बन्धी गलतियाँ हैं !

भक्तामर-प्रणत-मौलि-मणि-प्रभाणा-
मुघोतकं दलित-पाप-तमो-वितानम्।
सम्यक्-प्रणम्य जिन-पाद-युगं युगादा-
वालम्बनं भव-जले पततां जनानाम् ॥1॥

यः संस्तुतः सकल-वाङ्मय-तत्त्व-बोधा-
दुद् भूत-बुद्धि-पटुभिः सुर-लोक-नाथैः ।
स्तोत्रैर्जगत् त्रितय-चित-हरैरुदारैः
स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रनम् ॥2॥

बुद्धया विनापि विबुधार्चित-पाद-पीठ
स्तोतुं समुधत-मतिर्विगत-त्रपोऽहम् ।
बालं विहाय जल-संस्थितमिन्दु-विम्ब-
मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहितुम् ॥3॥

वक्तुं गुणान्गुण-समुद्र शशाङ्क-कान्तान्
कस्ते क्षमः सुर-गुरु-प्रतिमोऽपि बुद्धया।
कल्पान्त-काल-पवनोद्ध-नक्र-चक्रं
को वा तरीतुमलमम्बुनिधिं भुजाभ्याम् ॥4॥
सोऽहं तथापि तव भक्ति-वशान्मुनीश
कतुं स्तवं विगत-शक्तिरपि प्रवृत्तः।
प्रीत्यात्मवीर्यमविचार्य मृगो मृगेन्द्रं
नाभ्येति किं निज-शिशोः परिपालनार्थम् ॥5॥

अल्प-श्रुतं श्रुतं वतां परिहास-धाम
त्वद् भक्तिरेव मुखरीकुरुते बलान्माम् ।
यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति
तच्चाम्-चारु-कलिका-निकरैक-हेतुः॥6॥

त्वत्संस्तवेन भव-सन्तति-सन्निबद्धं
पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजाम् ।
आक्रान्त-लोकमति-नीलमशेषमाशु
सूर्याशु-भिन्नमिव शार्वरमन्धकारम् ॥7॥

मत्वेति नाथ तव संस्तवनं मयेद-
मारभ्यते तनु-धियापि तव प्रभावात् ।
चेतो हरिष्यति सतां नलिनी-दलेषु
मुक्ता-फलधुतिमुपैति ननूद-बिन्दुः ॥8॥

आस्तां तव स्तवनमस्त-समस्त-दोषं
त्वत्सङ्कतथाऽपि जगतां दुरितानि हन्ति।
दूरे सहस्र किरणः कुरुते प्रभैव

पध्माकरेषु जलजानि विकासभाज्जि॥9॥

नात्यद् भुतं भुवन-भूषण भूत-नाथ!
भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्तमभिष्टुवन्तः।
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा
भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति॥10॥

द्रष्ट वा भवन्तमनिमेष-विलोकनीयं
नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः।
पीत्वा पयः शशिकर-द्युति-दुग्ध-सिन्धोः
क्षारं जलं जल-निधे रसितुं कः इच्छेत् ॥11॥

यैः शान्त-राग-रुचिभिः परमाणुभिस्त्व
निर्मापितस्त्रिभुवनैक-ललाम-भूत।
तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्यां
यते समानमपरं न हि रूपमस्ति॥12॥

वक्त्रं क्व ते सुर-नरोरग-नेत्र-हारि
निःशेष-निर्जित-जगत्त्रितयोपमानम्।
बिम्बं कलंक-मलिनं क्व निशाकरस्य
यद्वासरे भवति पाण्डु-पलाशकल्पम्॥13॥

सम्पूर्ण-मण्डल-शशांक-कला-कलाप-
शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लगंघयन्ति।
ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वर-नाथमेकं
कस्तान्निवारयति संचरतो यथेष्टम्॥14॥

चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशागंगनाभि-
नीतं मनागपि मनो न विकार-मार्गम्।
कल्पान्त-काल-मरुता चलिताचलेन
किं मन्दराद्रि-शिखरं चलितं कदाचित्॥15॥

निर्धूम-वर्तिरपवर्जित-तैल-पूरः
क्रत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटी-करोषि।
गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानां
दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ जगत्प्रकाशः॥16॥

नास्तं कदाचिदुपयासि न राहु-गम्यः
स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगन्ति।
नाम्भोधरोदर निरुद्ध-महा-प्रभावः
सूर्यातिशायि-महिमासि मुनीन्द्र! लोके॥17॥

नित्योदयं दलित-मोह-महान्धकारं
गम्यं न राहु-वदनस्य न वारिदानाम्
विभाजते तव मुखाब्जमनल्पकान्ति
विद्योतयज्जगदपूर्व-शशांक-बिम्बम्।18।

किं शर्वरीषु शशिनाऽह्नि विवस्वता वा
युष्मन्मुखेन्दु-दलितेषु तमःसु नाथ
निष्पन्न-शालि-वन-शालिनि जीव-लोके
कार्यं कियज्जलधरैर्जल-भार-नमैः।19।

ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं
नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु ।
तेजः स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं
नैवं तु काच-शकले किरणाकुलेऽपि।20।
मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टा
दृष्टेषु येषु हृदयं त्मयि तोषमेति।
किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः
कश्चिन्मनो हरित नाथा!भवान्तरेऽपि।21।

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्
नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता।
सर्वा दिशो दधति भानि सहस्र-रश्मिं
प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालम्।22।

त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस-
मादित्य-वर्णममलं तमसःपुरस्तात्।
त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युं
नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनीन्द्र पन्थाः ।23।

त्वामव्ययं विभुमचिन्त्यमसंख्यामाद्यं
ब्रह्माणमीश्वरमनन्तमनगंकेतुम्।
योगीश्वरं विदितयोगनेकमेकं
ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदन्ति सन्तः।24।

बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चित-बुद्धि-बोधात्
त्वं शकरोऽसि भुवन-त्रय-शकरत्वात्।
धातासि धीर! शिव-मार्ग-विधेर्विधानात्
व्यक्तं त्वमेव भगवन्तुरुषोत्तमोऽसि ।25।

तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्तिहराय नाथ!
तुभ्यं नमः क्षितितलामलभूषणाय।

तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय
तुभ्यं नमो जिन! भवोदधि-शोषणाय|26|

को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै-
स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश।
दोषैरुपात्तविविधाशश्रय-जात-गर्वैः
स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि|27|

उच्चैरशोक-तरु-संश्रितमुन्मयूख-
माभाति रूपममलं भवतो नितान्तम्।
स्पष्टोल्लसत्किरणमस्त-तमो-वितानं
बिम्बं रवेरिव पयोधर-पाश्र्ववर्ति |28|

सिंहासने मणि-मयूख-शिखा-विचित्रे
विभाजते तव वपुः कनकावदातम्।
बिम्बं वियद् विलसदंशुलता-वितानं
तुर्गोदयाद्रिशिरसीव सहस्र-रश्मैः |29|

कुन्दावदात-चल-चामर-चारु-शोभं
विभाजते तव वपुः कलधोत-कान्तम्।
उद्यच्छशागं-शुचि-निर्झर-वारि-धार
मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शांतकोम्भम्|30|

छत्र-त्रयं तव विभाति शशागं-कान्त-
मुच्चैः स्थितं स्थगित-भानु-कर-प्रतापम्।
मुक्ता-फल-प्रकर-जाल-विवृद्धशोभं
प्रख्यापयत्त्रिजगतः परमेश्वरत्वम् |31|

गम्भीर-तार-रव-पूरित-दिग्विभाग-
स्त्रैलोक्य-लोक-शुभ-सगंमभूतिदक्षः।
सद्धर्मराज जय-घोषण-घोषकः सन्
खे दुन्दुभिध्वनति ते यशसः प्रवादी|32|

मन्दार-सुन्दर-नमेरु-सुपारिजात-
सन्तानकदि-कुसुमोत्कर-वृष्टिरुद्धा।
गन्धोद-बिन्दु-शुभ-मन्द-मरुत्प्रपाता
दिव्या दिवः पतति ते वचसां ततिर्वा|33|

शुम्भत्प्रभा-वलय-भूरि-विभा विभोस्ते
लोकत्रये द्युतिमतां द्युतिमाक्षिपन्ति।
प्रोद्यद्दिवाकर-निरन्तर-भूरि-संख्या
दीप्त्या जयत्यपि निशामपि सोम-सौम्याम्|34|

स्वर्गापवर्ग-गम-मार्ग-विमार्गणेष्टः
सद्धर्म-तत्त्व-कथनैक-पटुस्त्रिलोक्याः।
दिव्यःध्वनिर्भवति ते विशदार्थ-सर्व-
भाषा-स्वभाव-परिणाम-गुणैःप्रायोज्यः।35।

उन्निद्र-हेम-नव-पंकज-पुञ्ज-कान्ती
पर्युल्लसन्नख-मयूख-शिखाभिरामौ।
पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र! धतः
पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति।36।

इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेन्द्र
धर्मोपदेशन-विधौ-न तथा परस्य।
यादृक्प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा
तादृक्कुतो ग्रह-गणस्य विकाशिनोऽपि।37।

शच्योतन्मदाविल-विलोल-कपोल-मूल-
मत-भ्रमद्-भ्रमर-नाद-विवृद्ध-कोपम्।
एरावताभमिभमुद्धतमापतन्तं
दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम्।38।

भिन्नेभ-कुम्भ-गलदुज्ज्वल-शोणिताक्त-
मुक्ता-फल-प्रकर-भूषित-भूमि-भागः।
बद्ध-क्रमः क्रम-गतं हरिणाधिऽपोपि
नाक्रामति क्रम-युगाचल-संश्रितं ते।39।

कल्पान्त-काल-पवनोद्धत-वह्नि-कल्पं
दावानलं ज्वलितमुज्ज्वमुत्स्फुलिगंम्।
विश्व जिघित्सुमिव संमुखमापतन्तं
त्वन्नाम-कीर्तन-जलं शमयत्यशेषम्।40।

रक्तेक्षणं समद-कोकिल-कण्ठ-नीलं
क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतन्तम्।
आक्रामति क्रम-युगेण निरस्त-शखं-
स्त्वन्नाम-नाग-दमनी हृदि यस्य पुंसः।41।

वल्गतुरंग-गज-गर्जित-भीमनाद-
माजौ बलं बलवतामपि भूपतीनाम्।
उद्यद्विवाकर-मयूख-शिखापविद्धं
त्वत्कीर्तनात्तम इवाशु भिदामुपैति।42।

कुन्ताग्र-भिन्न-गज-शोणित-वारिवाह-
वेगावतार - तरणातुर - योध - भीमे।

युद्धे जयं विजित-दुर्जय-जेय-पक्षास्-
त्वत्पाद-पंकज-वनाश्रयिणो लभन्ते |43|

अम्भोनिधौक्षुभित-भीषण-नक्र-चक्र-
पाठीन-पीठ-भय-दोल्बण-वाडवाग्नौ
रंगतरंग-शिखर-स्थित-यान-पात्रास्-
त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद् व्रजन्ति |44|

उद् भूत-भीषण-जलोदर-भार-भुग्नाः
शौच्यां दशामुपगताश्च्युत-जीविताशाः।
त्वत्पाद-पंकज-रजोऽमृत-दिग्ध-देहा
मर्त्या भवन्ति मकरध्वज-तुल्यरूपाः|45|

आपाद-कण्ठमुरु-श्रंखल-वेष्टितागंगा
गाढं बृहन्निगड-कोटि-निधृष्ट-जंगघाः।
त्वन्नाम-मन्त्रमनिशं मनुजाः स्मरन्तः
सद्यः स्वयं विगत-बन्ध-भया भवन्ति|46|

मत्तद्विपेन्द्र-मगराज-दवानलाहि-
संग्राम वारिधि-मनोदर-बन्धनोत्थम्।
तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव
यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते|47|

स्तोत्रस्रजं तव जिनेन्द्र गुणैर्निबद्धां
भक्त्या मया रुचिर-वर्ण-विचित्र-पुष्पाम्।
धत्ते जनो य इह कण्ठ-गतामजस्रं
तं 'मानतुंगमवशा' समुपैति लक्ष्मीः|48|

इति श्री मानतुंगाचार्य विरचित आदिनाथ स्तोत्रं समाप्तम्।

Freely Download Now Rare Preaching's by Various Monks like Acharya Shantisagar ji, Acharya Vidyasagar Ji, Sudhasagar ji, Kshamasagar Ji, Dhyanagar Ji & So on: www.jinvaani.org

Download Freely Treasures of Online Jainism Music Resource's Bhaktamar Stotra, Puja, Stavan, Stotra, Ravindra Jain's Spiritual MP3: www.wuistudio.com [still downloaded 10,000 Times within 9 months]
